## महिन्याचा विचार

Sri Swamiji Maharaj was once travelling in a taxi with two of his colleagues from the Ashram. It so happened that on the way, they found someone lying on the road, badly injured all over the body. The taxi driver, of course, would take no notice of it and rushed forward in his usual speed. But Sri Swamiji quickly observed the scene and asked the driver to stop the vehicle. They got down and on enquiry found that the man was injured due to some accident and was lying in helpless condition. Sri Swamiji was ready immediately to lift the injured person into the vehicle so that he might be taken to the nearest hospital. But the driver would not allow it; for he feared that the police would regard him as the culprit and haul him up under the impression that his own vehicle might have been the cause of the accident. What was the alternative for Swamiji? He offered the driver the fare due to him and asked him to go his way, preparing himself with his two companions to lift the patient and go walking to the nearest hospital, whatever the distance. Seeing Sri Swamiji's infinite love for an unknown suffering man, the driver was greatly moved and consented to take the patient in the taxi.



एक बार स्वामी जी महाराज आश्रम के अपने दो सहयोगियों के साथ टैक्सी में यात्रा कर रहे थे। मार्ग में उन्हें सडक पर एक व्यक्ति पडा हुआ मिला जिसका सारा शरीर क्षत–विक्षत हो चला था। टैक्सी–चालक ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपनी सामान्य गति से गाडी चलाता रहा, किन्तु स्वामी जी ने शीघ्र ही उस दृश्य को देख लिया तथा चालक को गाडी रोकने को कहा। वे सब गाडी से उतर पडे। पूछने पर पता चला कि वह व्यक्ति किसी दुर्घटना से घायल हो कर असहाय अवस्था में सडक पर पडा हुआ है।

श्री स्वामी जी तुरन्त ही घायल व्यक्ति को उठा कर गाडी में रखने को तयार थे जिससे कि उसे निकटतम चिकित्सालय में पहुँचाया जा सके, किन्तु चालक ऐसा नहीं करने देता था; क्योंकि उसे आशंका थी कि पुलिस इस विचार से कि उसकी गाडी से ही दुर्घटना हुई होगी, उसे अपराधी समझेगी और उसके लिए उसे उत्तरदायी ठहरायेगी। स्वामी जी के लिए क्या विकल्प था? उन्होंने चालक को उचित धनराशि देकर उसे चले जाने को कह दिया और स्वयं अपने दोनों साथियों के साथ उस व्यक्ति को उठा कर निकटतम चिकित्सालय में, चाहे वह कितनी ही दूरी पर हो, ले जाने की तैयारी करने लगे। श्री स्वामी जी के उस अपरिचित असहाय व्यक्ति के प्रति इस निश्छल असीम प्रेम को देखकर चालक का हृदय परिवर्तित हो गया और वह उसे टैक्सी में ले जाने के लिए सहमत हो गया।



Sri Swamiji Maharaj inaugurated Swami Sivananda Centenary Charitable Hospital at Pattamadai on 25th December 1987, and he himself was the first patient to be seen. He was there at 7 o'clock, as the hospital door was to be opened at 8 a.m. He stood outside the hospital and was the first in the queue. Just like any ordinary patient, he asked for the form, paid his one rupee as donation which he had kept carefully. After that he went to the outpatient department and sat on the bench waiting for the doctor. He even refused to sit on a chair. After the consultation was over, he wanted the OPD ticket back to be kept carefully. It was the very first record and he wanted to be the very first person who showed himself in Gurudev's Hospital. Such was his Bhava towards his beloved Master

२५ दिसम्बर १९८७ को श्री स्वामी जी महाराज द्वारा पत्तमडै में स्वामी शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय का उद्घाटन किया गया। श्री स्वामी जी स्वयं प्रथम रोगी के रूप में अस्पताल गये। चूंकि अस्पताल खूलने का समय प्रात: ८ बजे था, श्री स्वामी जी वहाँ प्रात: ७ बजे ही पहुँच गये। वे अस्पताल के द्वार के बाहर अन्य रोगियों के साथ खडे रहे। जल्दी आने के कारण वे रोगियों की कतार में पहले स्थान पर ही थे। एक सामान्य रोगी की भाँति उन्होंने फार्म माँगा और एक रूपया दान के रूप में जमा कराया। इसके पश्चात् वे बाह्य रोगी विभाग(OPD) में गये और चिकित्सक की प्रतीक्षा में बेन्च पर बैठे। उन्होंने कुर्सी पर बैठने से भी मना कर दिया। चिकित्सक से परामर्श के बाद वे अपनी ओपीडी स्लिप सावधानीपूर्वक रखना चाहते थे क्योंकि गुरूदेव के इस अस्पताल का यह प्रथम रिकॉर्ड था और वे स्वयं प्रथम रोगी के रूप में आये थे। ऐसा था उनका अपने परमप्रिय गुरूदेव के प्रति अनुपम भाव।



## दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

* पुणे शाखेचा एप्रिल महिन्याचा सत्संग दि. ८ रोजी डॉ. आनंद राव यांच्या घरी संपन्न झाला. यावेळी जयपूर दिव्य जीवन संघ शाखेचे दोन सदस्य (डॉ. राव यांचे नातेवाईक) उपस्थित होते
* ''दिव्यजीवन'' या मासिक पत्रिकेचा मार्च अंक परिवारातील सर्व सदस्यांना वितरीत करण्यात आला.

### पुणे शाखेचा पत्ता

श्री. गो. आ. नगरकर
'स्वानंद एस् २०,
सहजीवन सोसायटी,
पर्वती, पुणे ४११००९
मो. ९३७०५७०२०६

श्री.नितीन देशपांडे
'ईशावास्य'
प्लॉट नं. ४९/सायंतारा,
डी.एस.के. विश्व, धायरी,
पुणे ४११०४१
मो.नं. ९८५०९३१४१७
९८५०८२६९९०

बुक पोस्ट

प्रति

# दिव्य जीवन

वर्ष १२/अंक ४
एप्रिल २०१७

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा

**विचार जीवित पदार्थ है।**

कोई भी विचार उतनाही ठोस है, जितना एक पत्थर है। हम समाप्त हो सकते है, पर हमारे विचार कभी नहीं मिट सकते।

विचारके प्रत्येक परिवर्तन के साथ उसके तत्त्वमें कंपन पैदा होता है। चूँकि विचार एक शक्ति है, उसे कार्य करनेमें एक विशेष प्रकारका सूक्ष्म पदार्थ आवश्यक होता है।

विचार जितना ही बलवान होता है उतनाही शीघ्र वह फलित होता है। विचार को अमुक निश्चित दिशामें केंद्रित करते है तो जिस अनुपातमें हम केंद्रित करते हैं उसी अनुपातमें वह लक्ष्य सिद्ध करनेमें सफल होता है।